International Journal of Applied Research 2016; 2(11): 01-04

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2016; 2(11): 01-04
www.allresearchjournal.com
Received: 01-09-2016
Accepted: 02-10-2016

प्रीतम सिंह सारसर
एम. ए.(इतिहास) विनायक मिज़न विज़्वविज़ालय, सलेम, तमिलनाडु
यू. जी. सी. नेट उत्तीर्ण

Correspondence
प्रीतम सिंह सारसर
एम. ए.(इतिहास) विनायक मिज़न विज़्वविज़ालय, सलेम, तमिलनाडु
यू. जी. सी. नेट उत्तीर्ण

कुषाण और गुप्तकालीन स्वर्ण मुद्राए

प्रीतम सिंह सारसर

प्रस्तावना

प्राचीन भारत के संदर्भ में स्वर्ण मुद्राएँ अपनी एक अहम् भूमिका रखती है। ये स्वर्ण मुद्राएँ प्राचीन भारत के एक ऐसे कालक्रम के द्योतक है जिसे आर्थिक रूप से समृद्धि की बात कहा गया है जिसमें अंतर्राष्ट्रीय व्यापारिक गतिविधियों के साथ नगर आधारित व्यवस्था तथा सामाजिक ढाँचे में कुछ नए परिवर्तन आने लगे थे। और जब इन मुद्राओं में कमी आयी तो इनके साथ आर्थिक ह्रास की प्रवृत्ति भी नजर आने लगी तथा सामंतवाद की जड़ें मजबूत होने लगी। भारत के एक बड़े भू-भाग पर स्वर्ण मुद्राओं को जारी करने का श्रेय सर्वप्रथम कुषाण शासकों को प्राप्त है हालाँकि इन शासकों के विदेशी मूल से सम्बंधित होने के कारण इनके स्वर्ण सिक्कों पर भी विदेशी संस्कृति का अधिक प्रभाव दिखाई देता है। किन्तु भारत में बसने के साथ-साथ यहाँ संस्कृति का प्रभाव भी इन पर अवश्य पड़ा जो इसके सिक्कों पर भारतीय मूल के देवताओं के चित्रण में झलकता है। इनके बाद गुप्त शासकों ने भी अपने पूर्ववर्ती शासकों से प्रेरणा लेकर बड़ी संख्या में स्वर्ण सिक्के चलाए तथा इनके सिक्कों के साथ स्वदेशीकरण की प्रक्रिया आरम्भ हुई जिसमें यूनानी और पश्चिमी एशियाई देवताओं के स्थान पर भारतीय देवताओं को और यूनानी लिपि के स्थान पर ब्राह्मी लिपि का प्रयोग शुरू किया। हालाँकि गुप्तों के सिक्के कलात्मक रूप से काफी उत्कृष्ट है तथा इनमें नए भावों का समावेश भी हुआ। परन्तु इनके सिक्कों में कुषाणों के स्वर्ण सिक्कों की तुलना में सोने के अंश की कमी पायी गई है। सोने के सिक्के समृद्धि को दर्शाते हैं जिसे कुषाणों और गुप्तों के संदर्भ में समझा जा सकता है। कुषाणों के सिक्कों का वितरण क्षेत्र काफी बड़ा था तथा ये गुप्तों के सिक्कों की तुलना में अधिक घिसी हुई स्थिति में मिलते हैं।

कुषाणों का सम्बंध यू-ची नामक कबीले से जोड़कर देखा जाता है। इनका साम्राज्य भारत में विस्तृत रूप से फैला था। जिसमें पूर्व में सोवियत गणराज्य में शामिल मध्य एशिया का अच्छा खासा भाग, ईरान का हिस्सा, अफगानिस्तान का कुछ अंश, लगभग पूरा पाकिस्तान और समूचा उत्तर भारत शामिल था। भारत में विमकद फिसेस के द्वारा सोने के सिक्के सर्वप्रथम जारी किए गए। सोने के सिक्के चलाने की प्रेरणा विमकद फिसेस को सम्भवत: रोमन सिक्कों से मिली होगी जो उन दिनों व्यापार के माध्यम से बड़ी संख्या में भारत आ रहे थे। परन्तु कुषाणों के स्वर्ण सिक्कों का विकास और ह्रास इंडो-रोमन व्यापार से जोड़कर देखा जा सकता है। मेशन द्वारा 1834-36 के मध्य अफगानिस्तान से मिले सिक्कों की जानकारी कुषाण सिक्कों पर पहला प्रमाणिक अध्ययन था। स्मिथ, डी.आर. भण्डारकर आदि ने भी कुषाण सिक्कों के महत्त्व पर शोध किए। स्वतंत्रता के पश्चात् भारतीय विद्वानों में A.S. Altekar, A.K. Narain तथा यूरोपीय विद्वानों में O.W. Macdowall, Mitter Wallner नाम प्रमुख है।

कुषाण स्वर्ण सिक्कें का भार रोमन स्वर्ण सिक्के Qureus के भार एवं आकार से काफी मिलता जुलता है। सम्भवत: इसका कारण यह रहा होगा कि इन स्वर्ण सिक्कों का प्रयोग भी अन्तराष्ट्रीय रूप से रोमन व्यापार के लेन-देन में आसानी से किया जा सके। कनिंघम ने विमकद फिसेस, कनिष्क एवं वासुदेव के ळवसक चपमबमे के पूर्ण denomination का एक औसत भारत की रूप रेखा प्रस्तुत की जो कि 123 ग्रेन के करीब थी।

कुषाणों के स्वर्ण सिक्कों के औसत भार के आधार पर तीन वर्ग में बांटा गया है। (1) Quarter Dinaras 308 gram (2) Double Dinar 246.4 grain (3) Dinaras 123.2 grain

कुषाणों के Quarter Dinar का सबसे कम 27 ग्रेन एवं सबसे अधिक 308 ग्रेन है। अधिकतम सिक्के 30 ग्रेन से ऊपर है। Double Dinar विमकद फिसेस द्वारा कुछ ही मात्रा में जारी किए गए। जिसका औसत भार कम से कम 237.6 ग्रेन एवं अधिकतम 246.4 ग्रेन का है। विमकद फिसेस के दिनार का भार 119.0 ग्रेन से 123.3 ग्रेन है। कनिष्क का दिनार जो बुद्ध का है 109.2 ग्रेन से 123.3 ग्रेन है। हुविष्क के दीनार 119.3 ग्रेन से 125 ग्रेन है। वहीं वासुदेव के दीनार 122.3 ग्रेन से 124.7 ग्रेन है। इस तरह से कम से कम 109.2 ग्रेन से उच्चतम 125 ग्रेन और इनका औसत 123 ग्रेन है।

विमकद फिसेस के सिक्कों में छह प्रकार पहचाने गए हैं। सभी प्रकार के सिक्कों में अग्रभाग पर राजा विभिन्न मुद्राओं में चित्रित दिखाया गया है। इसको सिंहासन पर बैठे, पालथी मारकर बैठे हुए, रथ पर बैठे, कभी-कभी बादलों के मध्य बैठे हुए, कुछ में दाढ़ी युक्त दिखाया गया है। हाथ में पुष्प, राजदण्ड लिये हुए तथा कोट-पतलुन और बुट पहने हुए दिखाया गया है, पृष्ठ भाग पर अधिकांश में शिव को उनके वाहन नंदी के साथ खड़े हुए त्रिशुल के साथ दिखाया गया है। अग्रभाग पर युनानी और पृष्ठ भाग पर खरोष्टी लिपियों को प्रयोग किया गया है।

कनिष्क प्रथम ने सोने के सिक्के दिनार और चौथाई दिनार प्रकार के चलाए थे। इन सिक्कों के अग्रभाग दो प्रकार के हैं- प्रथम प्रकार में कनिष्क प्रथम को वेदी में आहुति देते हुए दिखलाया है। राजा कोट-पतलुन और बुट पहने हुए हैं, हाथ से वेदी में हवन कर रहा है। दूसरे तरह के सिक्के में राजा की आवक्ष आकृति है। दाढ़ीयुक्त राजा के दाएं हाथ में राजदण्ड है तथा बांया हाथ वक्ष पर रखा है। इन दोनों प्रकार के सिक्कों पर वेसी-लिआँस-बेसीली-लिआन क्लेस्कायें अथवा शओनवो शओ कनेष्कीकोषानो लेख लिखे हुए मिलते हैं। पृष्ठभाग पर देवी-देवताओं के नाम यूनानी लिपि तथा बैक्ट्रीयन भाषा में लिखे हैं। सूर्य देवता, चन्द्र देवता, अग्नि देवता, पशुओं के संरक्षक देवता, समृद्धि की देवी, शिव धोती पहने हुए, बुद्ध खड़े हुए, कुछ देवताओं को कोट-पतलुन और बुट पहने दिखाया गया है। कनिष्क ने भारतीय यवन शासकों के काल से चली आ रही लिपिक आलेख की परिपाटी समाप्त कर अकेले यूनानी लिपि का प्रयोग किया। इस लिपि में उसने चिट ओर छवि के साथ नाम और विरूद्ध ओर पटभाग पर नाम रहित देवताओं को अंकित करने की नई पम्परा चलाई। कनिष्क के सिक्के काबूल से लेकर संयुक्त प्रांत के गाजीपुर जिले तक पाए जाते हैं।

हुविष्क के सिक्कों में कनिष्क प्रथम की अपेक्षा अधिक विविधता मिलती है उसके सिक्कों के अग्रभाग पर राजा के युवा से लेकर वृद्ध पुरुष तक के स्वरूप अंकित हुए हैं। राजा को बिना दाढ़ी के और दाढ़ीयुक्त दोनों रूपों में दिखाया गया है। उसने सोने के सिक्के दीनार और चौथाई दीनार प्रकार के सिक्के चलाये थे। उनके अग्रभाग पर शओननो राओ ऊएशकी कोषोनों लेख लिखा है उसका अर्थ शहंशाहों का शाह हुविष्क कुषाण। हुविष्क के सिक्कों पर कनिष्क के सिक्कों पर मिले देवताओं के अलावा अन्य देवताओं का भी चित्र मिलता है जिनमें महासेन, गणेश, हेराक्लेज, हरिहर, अराईषशों, जीरो आदि देवताओं की आकृति हुविष्क ने बनवाई थी। वासुदेव नाम के दो शासक हुए जिसमें वासुदेव प्रथम के सोने के सिक्कों के अग्रभाग पर राजा खड़ा हुआ है। राजा के एक हाथ में राजदण्ड है दूसरे से वेदी में आहुति दे रहा है यूनानी लिपि में शओननो राओ बजोदेओ कोषानों लिखा है। पृष्ठ भाग पर दण्ड और ढाल लिए ननादेवी अंकित है। वासुदेव द्वितीय के सिक्कों पर वासुदेव से मिलता जुलता चित्रण है तथा पृष्ठभाग पर अदोक्षो देवी का सिहासनारूढ़ चित्रण है। परवर्ती कुषाणों में कुषाणों के वंशज किदार कुषाण, कुषाण सासानी आदि द्वारा सिक्के चलाए गए जो कलात्मक रूप से अधिक अच्छे नहीं बने हैं।

कुषाण शासकों ने जिस स्वर्ण मुद्रा को प्रकाशित किया उस मुद्रा को उसके बाद के गुप्त वंश के शासकों द्वारा अधिक नए रूप तथा कलात्मक दृष्टि से अधिक उत्कृष्ट रूप प्रदान करके जारी करने की प्रक्रिया को आगे बढ़ाने का कार्य किया गया। उन्होंने कुषाणों की तुलना में अधिक स्वर्ण मुद्राओं को जारी किया जो उनकी समृद्धि को प्रकट करते हैं तथा उनकी आर्थिक स्थिति को समझने में मददगार सिद्ध हुए हैं। गुप्त वंश के चन्द्रगुप्त प्रथम से लेकर प्रायः सभी शासकों ने स्वर्ण सिक्के जारी किए। हालांकि उनके सिक्कों में समय के अनुसार चौल राजा और देवी देवताओं की आकृतियों तथा लेखों के अंकन में अंतर अवश्य दिखाई देता है। गुप्त वंश में चाँदी से अधिक सोने तथा ताँबे के सिक्के अधिक प्रचलन में थे। गुप्त शासकों के स्वर्ण सिक्कों का प्रमाण बंगाल के कालीघाट और राजस्थान के बयाना में मिला है। तथा पश्चिम भारत में गुजरात से लेकर पूर्व में उड़ीसा और बंगाल तक के अनेक स्थानों से सोने के सिक्कों की उपस्थिति पाई गई है।

गुप्त शासकों ने अपने सोने के सिक्कों के अग्रभाग पर अधिकतर स्वयं की विभिन्न मुद्राओं में आकृतियाँ बनवाई तथा ऐसे लेख अंकित करवाए जो उन्हें बड़ी उपाधियों से विभूषित करते हैं तथा उनकी प्रशंसा में लिखे गए हैं तथा दोनों भागों पर ब्राह्मी लिपि तथा संस्कृत भाषा में लेख लिखे गए हैं। सिक्कों के पृष्ठ भागों पर ब्राह्मी लिपि तथा संस्कृत भाषा में लेख लिखे गए हैं। सिक्कों के पृष्ठ भाग पर अधिकतर रूप में लक्ष्मी का चित्र मिलता है। कुछ जगहों पर अंबिका, गंगा तथा कुमार गुप्त के एक प्रकार के सिक्के पर कार्तिकेय का चित्र मिलता है इसी प्रकार चन्द्रगुप्त द्वितिय के सिक्के के पृष्ठ भाग पर राजा रानी का चित्र है। विसेन्ट स्मिथ, जॉन एलन, सदाशिव अल्तेकर आदि विद्वानों द्वारा इन स्वर्ण सिक्कों का नामकरण प्रायः अनेक अग्रभाग पर बनी हुई आकृति के आधार पर ही किया है। इन सिक्कों की संख्या लगभग 20 प्रकार की दिखाई गई है। जो इस प्रकार है। धनुर्धर, राजदण्ड, चक्रध्वज, खड्गधारी, कृतान्तप्रशु, राजा और रानी, वीणाधारी, पृथक, व्याघ्रनिहंता, अश्वारोही, छत्रप्रकार, अप्रविद्य, अश्वमेध प्रकार के स्वर्ण सिक्के निर्धारित किए गए हैं।

गुप्त शासकों द्वारा चलाए गए स्वर्ण सिक्कों के भार में समय के साथ अन्तर देखने को मिलता है। शुरूआती गुप्त शासकों के सिक्कों

का भार लगभग कुषाणकालीन स्वर्ण सिक्कों जितना था। परन्तु बाद के शासकों के सिक्कों के भार में बढ़ोत्तरी साफ तौर से नजर आती है जिसे एक तालिका द्वारा गुप्त शासकों के सिक्कों के तौल के आधार पर समझा जा सकता है।

तालिका

गुप्त शासक	भार (ग्रेन में) लगभग
चन्द्रगुप्त प्रथम	119-123
समुद्रगुप्त	110-122.5
काँच	111-118
चन्द्रगुप्त द्वितीय	112-127
कुमारगुप्त	121-127
स्कन्दगुप्त	130-144.6
नरसिम्हागुप्त	144-149

जिसमें स्कन्द गुप्त, नरसिम्हा गुप्त तक सिक्कों के भार में बढ़ोतरी नजर आती है जिसका कारण मिश्रित धातु की वृद्धि थी जो ह्रास के कारण सोने की कमी के रूप में संभवत: समझी जा सकती है। गुप्तों के सिक्कों में सोने की मात्रा के संदर्भ में सर्वप्रथम कनिंघम ने कहा कि 125 ग्रेन के एक सिक्के में 42 ग्रेन शुद्ध सोने की मात्रा थी। वही अल्तेकर (Coinage of the Gupta Empire) के अनुसार गुप्तों के प्रारम्भिक सोने के सिक्कों में मात्र मिश्रित धातु का भाग 10: भाग पाया जाता है जबकि स्कन्द गुप्त, बुद्धगुप्त नरिसिम्हा गुप्त, कुमार गुप्त द्वितिय के काल के सोने के सिक्कों में मिश्रित धातु का 25: भाग प्राप्त होता है। इस आधार पर इनके 150 ग्रेन के सिक्के में 113 ग्रेन शुद्ध सोना विद्यमान था। गुप्तशासकों के अधिकतर स्वर्ण सिक्कों का व्यास 7.5 से 8.5 तक है। तथा कुछ का 6 से 8.5 के मध्य है। गुप्त सिक्के दिनार के नाम से ही पहचाने गए हैं।

चन्द्रगुप्त प्रथम के द्वारा सर्वप्रथम स्वर्ण सिक्के जारी किए गए और उसके सिक्कों पर राजा रानी दोनों का चित्रण किया गया है। दोनों प्रभामण्डल युक्त है तथा दोनों वस्त्राभूषण पहने दिखाए गए हैं। कुछ सिक्कों पर राजा रानी के बीच अर्धचन्द्र जैसी आकृति बनी है, ब्राह्मणी लिपी में चन्द्रगुप्त और श्री कुमार देवी लिखा है। कुछ पर कुमार देवी श्री भी अंकित है। इन सिक्कों के संदर्भ में वि. स्मिथ का कहना है कि ये सिक्के चन्द्रगुप्त, कुमार, देवी और लिच्छिवियों के संयुक्त नाम से चलाए गए थे। अत: इन सिक्कों से चन्द्रगुप्त और कुमार देवी के विवाह और लिच्छवियों के साथ हुए गठबंधन का बोध होता है।

समुद्रगुप्त के 6 प्रकार के सोने के सिक्कों को पहचाना गया है सभी सिक्कों में कुछ समान चित्रण के साथ कुछ भिन्नता भी नजर आती है। राजदण्ड प्रकार के सिक्कों में राजा प्रभामण्डल युक्त स्थानक मुद्रा के साथ वस्त्राभूषण पहने हैं। दाऐं हाथ से वेदी में हवन कर रहा है। अश्वमेध प्रकार के सिक्कों में राजा का चित्रण नहीं मिलता, अग्रभाग पर चबुतरे पर यूव बना है। कांच नामक गुप्त राजा के केवल एक प्रकर के सोने के सिक्के मिले हैं। हालांकि इस राजा की पहचान को लेकर विद्वानों में मतभेद है। इस सिक्के के अग्रभाग में राजा स्थानक आकृति में दायें हाथ से वेदी में आहुति, साथ ही बयाना दफीने से प्राप्त एक सिक्के पर गरूड़ध्वज का चिन्ह बना है जो अन्य सिक्कों पर नहीं मिलता। इसके पृष्ठभाग पर देवी लक्ष्मी का चित्र बना है। चन्द्रगुप्त द्वितीय के आठ प्रकार के सिक्कों को पहचान कर उनकी अलग-अलग विशेषताओं के आधार पर उनको नामांकित किया है। जैसे धनूर्धर, सिंह निहन्ता, छत्र प्रकार, पर्थक पर आसीन राजा रानी, राजदण्ड युक्त चक्रविक्रम प्रकार इन सिक्कों पर राजा विभिन्न मुद्राओं में प्रभामण्डल युक्त चित्रित है। स्थानक मुद्रा में सिंह पर सामने से आक्रमण करते हुए और कुछ पर पैरों से सिंह को कुचल रहा है। पृथक पर आसीन राजा-रानी प्रकार के सिक्कों को छोड़कर विभिन्न प्रकार के सिक्कों पर देवी लक्ष्मी को अलग-अलग मुद्राओं में दिखाया गया है। कुमारगुप्त प्रथम जिसके सिक्कों में अपने पूर्ववर्ती शासकों की तुलना में अधिक मात्रा में मिले हैं। इनके कुछ सिक्कों की समानता लगभग अपने पूर्ववर्ती शासकों जैसी ही पाई गई है जिसमें धनुर्धर, अश्वारोही, सिंनिहता, अश्वमेध, छत्र प्रकार के सिक्के शामिल है परन्तु कुछ प्रकार के सिक्कों में कुछ नए प्रकार के चित्रण मिलते हैं। व्याघ्रनिहन्ता जिसमें राजा धनुष से बाण चलाकर व्याघ्र पर आक्रमण कर रहा है कुछ सिक्कों में 'कु' लिखा है। पृष्ठभाग पर देवी गंगा अपने वाहन मकर पर खड़ी है। कुमारगुप्त के एक सिक्के पर कार्तिकेय का अंकन है। प्रभामण्डल से युक्त कर्तिकेय मयुर पर सवार है।

स्कन्दगुप्त के द्वारा केवल भांत के सोने के सिक्के चलाए गए और उनमें भी कोई उसके पूर्ववर्ती शासकों से अलग प्रकार का नहीं दिखता। परन्तु इसके सिक्कों की तोल में पूर्ववर्ती शासकों की तुलना में अधिक वृद्धि मिलती है तथा सिक्कों में सोने की मात्रा में गिरावट पाई गई है। इसका भार 130 ग्रेन से 144.6 ग्रेन के बीच आंका गया है जो सिक्कों में मिश्रित धातु की वृद्धि को दर्शाता है। स्कन्दगुप्त के बाद के शासकों ने काफी कम मात्रा में सिक्के जारी किये। इन शासकों में नसिंहगुप्त, कुमार गुप्त को बुध गुप्त, विष्णु गुप्त तथा वेन्यगुप्त आते हैं। इनके सिक्कों में विविधता देखने को नहीं मिलती केवल धर्नुधर प्रकार के सोने के सिक्के अधिकतर मिलते हैं। नरसिंहगुप्त के सोने के सिक्कों की तोल 144 ग्रेन तथा 149 ग्रेन मापी गई है जो आर्थिक गिरावट को दर्शाती है।

इस तरह हम देखते हैं कि गुप्त शासकों द्वारा सिक्कों का निर्माण कुछ विशेष अवसरों पर किया गया। इनके सिक्कों में समय के साथ परिवर्तन आया। जैसा कि कुषाणों के सिक्कों में यह परिवर्तन नजर नहीं आते। खास तौर से इनके चित्रों में रूढ़ीवादी प्रवृती ही बनी रही परन्तु लम्बे कोट व पजामा पहने अग्नि में धूप डालते दिखलाए गये इस वेश के कारण गुप्त सिक्के कुषाण सिक्कों के अनुकरण ही माने जा सकते हैं। पृष्ठ भाग पर देवी का चित्रण भी कुषाण के सिक्कों की तरह है। गुप्त सम्राटों ने अरदीक्षी देवी के स्थान पर लक्ष्मी का समावेश किया। वहीं कुषाण कालीन सिक्कों पर जहाँ सामन्तवादी प्रभाव नजर नहीं आता परन्तु गुप्तों पर दिखाई देता है। हमारे लिए यह समझ लेना आवश्यक हो जाता है कि कुषाण तथा गुप्त कालीन सवर्ण सिक्के इस समय की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक तथा धार्मिक स्थिति के बारे में हमारी समझ को कहाँ तक बढ़ाते हैं।

राजनीतिक रूप से कुषाणें के लिए इन सिक्कों का अधिक महत्त्व रहा है क्योंकि कुषाणों का अधिकांश इतिहास सिक्कों में मिली जानकारी के आधार पर लिखा गया है। इनके शासकों के बारे में सिक्कों से ही पता चलता है तथा इन शासकों के सिक्कों के फैलाव के आधार पर इनके साम्राज्य के विस्तार के बारे में सही जानकारी मिलती है। गुप्तों के संदर्भ में कांच गुप्त के बारे में पता चलता, जिसका नाम गुप्तवंशावली में नहीं मिलता।

कुषाणों के सिक्कों में जहाँ शासक कोट, पतलुन तथा बुट पहने दिखाए गए हैं जो मध्य एशिया की वेशभूषा का बोध कराते हैं। गुप्तों के कुछ शासकों के सिक्कों पर राजा के साथ रानी का चित्रण सामाजिक अवसरों पर दोनों की उपस्थिति को दर्शाता है। सिक्कों पर चित्रित देवी-देवताओं का जो प्रमाण मिलता है वह उस समय को प्रचलित देवी-देवताओं की जानकारी देते हैं। कुषाणों के सिक्कों पर यूनान, रोम और ईरानी देवी-देवताओं के अलावा भारतीय देवताओं को भी महत्त्व मिला। कुषाण के अधिकतर शासकों के सिक्कों पर शिव का चित्रण उनके शिव के उपासक होने का ईशारा करता है।

कुषाणों तथा गुप्तों के समय जो सिक्के मिलते हैं, उन सिक्कों को बनाने के लिए जिस सोने का इस्तेमाल किया जाता था। उसके स्रोतों के बारे में कोई सुनिश्चित जानकारी नहीं है, हालांकि कुषाणों के संदर्भ में यह कहा गया है कि उनके पास सोना इण्डो-रोमन व्यापार तथा मध्य एशिया के अल्ताई पहाड़ों से मिलता था। वहीं गुप्तों को व्यापार के साथ बिहार की सोने की खदानों तथा कोलार की खदानों से मिलता था बहरहाल सिक्कों का अधिकांश रूप से अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में प्रयोग किया जाता था। इन सिक्कों की अधिक मात्रा प्राचीन भारत में तभी देखी जाती है जब व्यापारिक गतिविधियाँ अच्छी थी। कुषाणों का सिक्का व्यापार पर नियंत्रण था। तब ये सिक्के चलाए गए तथा गुप्त काल तक इनकी संख्या काफी अधिक बढ़ गई। परन्तु जब व्यापारिक गतिविधियाँ का ह्रास हुआ तथा विदेशी व्यापार में गिरावट आई तो इन सिक्कों में कमी के साथ इनकी गुणवत्ता भी निम्न कोटि की हो गई।

संदर्भ ग्रन्थ

1. डॉ. संतोष कुमार वाजपेयी - अभिलेख शास्त्र एवं मुद्राशास्त्र के मूल तत्व
2. डॉ. अनन्त सदाशिव अल्तेकर- गुप्तकालीन मुद्राऐं
3. डॉ. परमेश्वरी लाल - भारत के पूर्वकालिक सिक्के
4. उपाध्याय - भारतीय सिक्के
5. डी.एन. झा - प्राचीन भारत।